स्कूल असेम्बली का उपयोग और उद्देश्य

मोनिका भण्डारी



इस लेख में, मैं स्कूली जीवन के दो महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा करूँगी। सबसे पहले, स्कूल **असेम्बली** का उद्देश्य और उपयोग और दूसरा, एक ही विषय को अलग-अलग स्तर पर पढ़ाना।

किसी भी स्कूल में बच्चों के साथ काम करते हुए हम हर रोज़ नए-नए अनुभवों से रूबरू होते हैं। मेरा मानना है कि यदि हम अपने स्कूल में किसी विषय के विशेषज्ञ बनकर जाएँ तो बच्चों के साथ सामंजस्य बिठाना मुश्किल हो जाता है। ऐसा इसलिए कि हम बच्चों के साथ कुछ अलग सीख रहे होते हैं और फिर विषय की विशेषज्ञता कहीं पीछे छूट जाती है। यहाँ मेरा तात्पर्य यह नहीं कि विषय-विशेषज्ञता बुरी है पर हमें खुद को उन बच्चों के स्तर तक ले जाना होता है जहाँ पर वे उस वक़्त होते हैं। ऐसा ज़रूरी भी नहीं है कि सारे बच्चे एक ही स्तर के हों। हमारे स्कूल में आने वाले बच्चे अधिकतर अलग-अलग स्तर के ही होते हैं और कहीं-न-कहीं यह हमारे लिए शिक्षण में एक समस्या बनकर उभरती है।

मैं कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को विज्ञान व गणित पढ़ाती हूँ। दोनों ही विषय तब काफी चुनौतीपूर्ण हो जाते हैं जब कक्षा 6 में आने वाले बच्चों को गणित की मूल संक्रियाओं जोड़, घटाना, गुणा, भाग की ही समझ पक्की नहीं होती। यदि पाठ्यक्रम के अनुसार चलने का सोचा जाए तो थोड़ा मुश्किल हो जाता है। गणित जैसे विषय की मोटी किताब को देखकर भी कई बार मन में सवाल उठते हैं कि कब और कैसे हो पाएगा इतना। बच्चों की रुचि एवं स्तर के अनुसार कुछ करवा पाऊँगी या नहीं। कुल मिलाकर जूझने की स्थिति होती है। फिर जब बारीक़ी से सोचो कि क्या ज़रूरी है मेरे इन प्यारे बच्चों के लिए - पाठ्यक्रम या मूलभूत क्रियाओं, अवधारणाओं की समझ? तब जाकर लगता है मुझे कुछ ऐसा करना है कि इन बच्चों का विश्वास भी मुझ पर बना रहे और किसी विषयवस्तु पर इनकी समझ पक्की बन जाए।

बच्चे बहुत क्रियाशील और कल्पनाशील होते हैं। कई बार तो हम उनकी प्रकृति को समझ ही नहीं पाते। अनेकों बार ऐसा हुआ है कि मुझे बच्चों के अनुभवों से ही सीखने की ज़रूरत पड़ी है। मेरी दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य यह कतई नहीं है कि दी गई किताबों को एक किनारे से दूसरे किनारे तक पढ़ाकर रख दिया जाए। बल्कि ज़रूरी है कि बच्चों के सामने एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जो उनके लिए स्वतंत्र एवं सुरक्षित हो तथा जिसमें वे कुछ ऐसा सीख रहे हों या गढ़ रहे हों जो उनकी समझ विकसित करने वाला हो।

अपने स्कूल के बच्चों के साथ जो कुछ काम कर पाई हूँ या कर रही हूँ उसे यहाँ पर साझा कर रही हूँ।

स्कूल असेम्बली का उपयोग और उद्देश्य

स्कूल असेम्बली हर स्कूल का ज़रूरी अंग माना जाता है। मेरी दृष्टि में भी यह ज़रूरी है क्योंकि यही वह वक़्त होता है जब सभी बच्चे एक साथ नई ताजगी लिए होते हैं। वे इस सभा में एक-दूसरे से कुछ सीख रहे होते हैं। बहरहाल मैंने महसूस किया कि सभी बच्चे अलग-अलग स्तर के होते हैं जिन्हें हम क्लासवाइज समूहीकृत नहीं कर सकते। हमें उनको उनके स्तर के अनुरूप समूह में बाँटने की ज़रूरत होती है। असेम्बली का मुख्य उद्देश्य भी तो यही है कि बच्चे अपने संकोच को भूलकर समूह में कुछ सीखें तथा उसका प्रदर्शन करें। इसी क्रम में मैंने सर्वप्रथम बच्चों को तीन समूहों में बाँटा। अधिकांश बच्चे सबके सामने बोलने में संकोच करते हैं। उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। ऐसी स्थिति तब है जबकि मेरे स्कूल में बोलने की पूरी स्वतंत्रता दी गई है। उनका आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए मुझे कुछ रूपरेखा तैयार करनी थी ताकि प्रत्येक बच्चा असेम्बली में या अन्य जगहों पर भी आगे आकर कुछ बोले। आमतौर पर बच्चे आगे आने में घबराते हैं।

इसी कमज़ोरी को दूर करने के लिए मैंने स्कूल की विद्यार्थी संख्या के अनुसार बच्चों के तीन ग्रुप बनाए। प्रत्येक ग्रुप में लड़के-लड़कियाँ समान रूप से थे। कक्षा 6 से 8 तक के स्कूल में किशोरवय बच्चों के साथ यह बात भी सामने आती है कि लड़के-लड़कियाँ अलग-अलग ग्रुप में रहना चाहते हैं पर उनके संवेगात्मक विकास को देखते हुए मैंने प्रत्येक ग्रुप में समान रूप से दोनों की भागीदारी करवाई। प्रत्येक ग्रुप को प्रार्थना करवाने, कक्षा-कक्षों की सफाई करवाने, क्यारियों में पानी डालने आदि की ज़िम्मेदारी एवं अन्य छोटे-मोटे कार्य सौंप दिए। प्रत्येक ग्रुप को अलग-अलग नाम जैसे येलो हाउस, रेड हाउस तथा ग्रीन हाउस दे दिए। इनके लिए इन्हीं रंगों के बैज भी बनवाए हैं। अब कार्य करने की ज़िम्मेदारी बच्चों की होती है।

पहले दो दिन प्रथम ग्रुप, दूसरे दो दिन द्वितीय तथा तीसरे दो दिन तृतीय ग्रुप की ज़िम्मेदारी होती है। प्रत्येक ग्रुप अपने कार्य को अच्छे से अच्छा करना चाहता है। प्रार्थना सभा में भी ग्रुपवाइज

बच्चे प्रार्थना, समूह-गान आदि करते हैं। हाँ, सामान्य ज्ञान पूछना, कहानी, आज का विचार, मुख्य समाचार, स्थानीय समाचार आदि कक्षा के रोल नम्बर के अनुसार होते हैं। इससे सभी बच्चों को बोलने का मौक़ा मिल जाता है। ऐसा करने से अब संकोची बच्चे भी कुछ-न-कुछ बोलने लगे हैं। कुछ बच्चे तो आगे जाकर कमाण्डस भी देने लगे हैं। असेम्बली में ग्रुप में काम करने में मज़ा तो आया ही, साथ ही बच्चों में अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास होने लगा है। बच्चों के स्तर के अनुरूप काम करने में यही अच्छी बात है कि प्रत्येक बच्चे को अवसर मिलता है। कुछ बच्चे अभी भी आधा-अधूरा बोलते हैं पर प्रयास जारी है। क्यारियाँ बनाने, सफ़ाई करने में भी बच्चे भाग लेने लगे हैं। अतः ग्रुप में काम करने के अनेक फायदे हैं। मुख्यतः मेरा उद्देश्य यह था कि बच्चे निःसंकोच होकर कुछ बोल पाएँ तो असेम्बली इसके लिए सबसे अच्छा माध्यम सिद्ध हुआ। ग्रुप में कार्य करना तो बड़ा उपयोगी हो रहा है। बच्चे ग्रुप के महत्त्व को समझने लगे हैं। कई बार शिकायतें भी आती हैं कि फलाँ बच्चा फलाँ काम नहीं कर रहा है तो इन शिकायतों का निस्तारण भी उन्हीं के माध्यम से हो जाता है।

अतः असेम्बली समूह में कार्य करने का अच्छा एवं उपयोगी साधन है जो कि अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सहायक है।

विभिन्न स्तरों पर एक ही विषय पढ़ाना

जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूँ कि हमारे पास आने वाले बच्चे अलग-अलग स्तर के होते हैं। उनकी दक्षताएँ तथा क्षमताएँ अलग होती हैं। ऐसे में विचार आया कि ऐसा क्या किया जाए कि प्रत्येक बच्चे की मूल दक्षताएँ विकसित एवं स्थाई हो सकें। मुझे अपर प्राइमरी में पढ़ाते हुए तीन साल हो चुके हैं। पहले मैं पारम्परिक शिक्षण ही किया करती थी। गणित की मूल संक्रियाएँ अलग-अलग कक्षा में अलग-अलग पढ़ाने में ही काफी समय चला जाता था। ऐसे में कुछ बच्चे प्रत्येक कक्षा में ऐसे भी होते थे जो इन संक्रियाओं को जानते थे तथा आगे पढ़ना चाहते थे। अतः इस समस्या का समाधान भी फिर ग्रुप बनाकर किया। तीनों कक्षाओं से अलग-अलग स्तर के बच्चों की छँटनी की। एक ग्रुप उन बच्चों का जो अभी गणित की मूल संक्रियाओं से ही जूझ रहे हैं तथा दूसरा ग्रुप इनसे आगे की समझ रखने वाले बच्चों का तथा तीसरा ग्रुप उन बच्चों का जो किसी भी टॉपिक को सामान्यतः समझ जाते हैं। इस तरह ग्रुप में काम करने से थोड़ी आसानी हुई लेकिन अन्य शिक्षकों को भी अपनी कक्षाएँ व विषय लेने होते हैं तो प्रत्येक कक्षा से ग्रुप में बच्चों को लेने में कठिनाई भी आई। फिर भी अलग-अलग स्तर निर्धारित हो जाने पर कार्य करने में सुविधा हो जाती है। हमें पता होता है कि किस ग्रुप के साथ आज क्या काम करना है।

कक्षा 6, 7, 8 में गणित विषय में भिन्न पढ़ाने का अनुभव काफी अच्छा रहा। आज तक मैं साधारण तरीक़े से ही पढ़ा रही थी लेकिन मैंने महसूस किया कि बच्चे भिन्न से सम्बन्धित संक्रियाएँ तो कर लेते हैं पर भिन्न की अवधारणा पर उनकी समझ पक्की नहीं है। गणित की अमूर्तता शायद उन्हें विचलित कर रही थी। फिर विचार किया कि ऐसा कुछ करना चाहिए कि बच्चे भिन्न की अवधारणा पर अपनी समझ बना सकें। इसमें कुछ मदद एपीएफ के साथियों ने भी की। उनसे बातचीत के आधार पर मैंने भिन्न की अवधारणा पर कुछ गतिविधि करवाई।

सबसे पहले बच्चों से बातचीत की। भिन्न की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया। कुछ पेपर्स, कैंची, गोंद, कलर्स आदि कक्षा में लेकर गई। फिर मैंने उन्हें बताया कि आज हम कुछ गतिविधि करने वाले हैं जिसमें हम इन पेपर्स को फोल्ड या कटिंग करेंगे तथा कुछ नया बना रहे होंगे। सभी बच्चों ने बड़ी उत्सुकता से इसमें भाग लिया। पेपर्स फोल्डिंग की मदद से उन्हें आधा (1/2), तिहाई (1/3), चौथाई (1/4) पाँचवाँ, छठवाँ... भाग आदि सिखाए। सबसे सुखद यह था कि बच्चे बहुत कोशिश कर रहे थे और काग़ज़ ग़लत फोल्ड हो जाने पर बार-बार सही फोल्ड करने की कोशिश कर रहे थे। अन्त में सब बच्चे अच्छी तरह से भिन्न की पट्टियाँ तैयार कर पाए। उन्हें हमने चार्ट पेपर पर चिपकाकर कक्षा में टाँगा तथा बच्चों ने अपनी कॉपियों पर भी चिपकाया। इन्हीं भिन्न की पट्टियों के आधार पर बड़ी व छोटी भिन्न, आरोही-अवरोही, तुल्य भिन्न पर भी बच्चों की समझ बनी। इस गतिविधि में सबसे अच्छी बात यह थी कि बच्चे ख़ुद-ब-ख़ुद करके समझ रहे थे। इस पर एक वाकया और याद आ रहा है। एक बच्चा था जिसके पेपर्स फोल्डिंग में खराब हो गए थे। गतिविधि के बाद ब्रेक (लंच) टाइम था। सभी बच्चे लंच करने गए लेकिन वह कक्षा में ही बैठा रहा। उसने दुबारा से पेपर फोल्ड किए तथा पूरी भिन्न की पट्टियाँ बन जाने पर ही वह लंच के लिए गया। मेरे लिए यह दिल छू लेने वाला अनुभव था। अगले दिन जब उसने अपना काम दिखाया तो उसकी आँखों की चमक देखते ही बनती थी, अतः ग्रुप में काम करने का यह अच्छा एवं उपयोगी अनुभव रहा।

दीवार-पत्रिका

अपने स्कूल में मैंने दीवार-पत्रिका पर भी बच्चों के साथ कुछ काम करने की कोशिश की है। दीवार-पत्रिका एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों की सृजन क्षमता को बढ़ाने का काम करती है। इसमें सभी बच्चे अपनी स्वरचित रचनाओं को सजाकर चार्ट पर चिपकाकर दीवार पर टाँगते हैं। दीवार-पत्रिका केवल दीवार को सजाने के लिए नहीं है। यह तो एक माध्यम है सृजन

क्षमता बढ़ाने का। शुरू में बच्चे स्वरचित चीज़ें नहीं ला पाते क्योंकि सृजन करना शुरुआती तौर पर थोड़ा मुश्किल होता है। इसी बात को आधार बनाकर मैंने पहले बच्चों को खुद कहानियाँ सुनाईं, कविताएँ पढ़वाईं, पुस्तकालय से किताबें पढ़ने को दीं। फिर कुछ बच्चे तो स्वयं रचना कर पाए, कुछ अभी भी कोशिश कर रहे हैं। दीवार-पत्रिका को 'उमंग' नाम दिया गया है। यह माध्यम सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है तथा बच्चों में लिखने, चिन्तन करने का कौशल उत्पन्न करता है। सभी बच्चे ख़ुश होकर इसमें सहयोग करते हैं। बच्चे कहते हैं, "मैम! पहले ऐसा कभी हमारे स्कूल में नहीं हुआ। हमें इसमें बहुत मज़ा आता है।"

अलग-अलग स्तर के बच्चों के साथ काम करना चुनौतीपूर्ण तो है लेकिन कोशिश की जाए और समूह में काम किया जाए तो कुछ हद तक सफलता पाई जा सकती है।

अपने स्कूल के बच्चों के साथ काम करते हुए महसूस हुआ कि बड़े उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए पहले छोटे-छोटे उद्देश्यों को पूरा किया जाना ज़रूरी है। मूल अवधारणाओं पर बच्चों की समझ बनाना सबसे आवश्यक है। मेरी कक्षा के अनुभव मुझे हर बार नया करने को प्रेरित करते हैं। अब मेरे बच्चे भी मुझ पर विश्वास जताने लगे हैं। उम्मीद है आगे भी बच्चों के साथ निरन्तर काम करना जारी रहेगा।

मोनिका भण्डारी राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय, बल्डोगी, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में सहायक शिक्षिका हैं। वह विज्ञान पढ़ाती हैं। उनसे monikaamod6006@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।